<u>विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय</u>

<u>रूपम कुमारी , वर्ग दशम, विषय हिंदी</u>

हिन्दी भाषा के लेखक यशपाल

यशपाल हिंदी भाषा के लेखक, राजनितिक वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता थे। जो खास तौर पर गरीबो और बेसहारा लोगो को सहायता करते थे। अपने करियर में उन्होंने बहुत से निबंध, उपन्यास, लघु कथा, नाटक और दो यात्रा किताब और एक जीवनी की रचना की है।

यशपाल देश के उन चुनिंदा यशस्वी साहित्यकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने बंदूक से क्रांति की आवाज बुलंद करने के साथ-साथ कलम चलाकर भी समाज को झकझोरा. क्रांतिकारी विचारों के धनी यशपाल समाज में सामाजिक एवं आर्थिक समानता लाने के पक्षकार थे। Great Hindi Language Writer

प्रारंभिक जीवन (Yashpal Early Life) :

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर,1903 में फ़िरोजपुर छावनी में हुआ था। जो पंजाब राज्य में है। इनके पिता का नाम हीरालाल था। जो एक साधारण व्यक्ति थे, और इनको केवल अपने पिता से विरासत के रूप में दो-चार सौ गज़ जमीन तथा एक कच्चे मकान ही मिला था। उसके अतिरिक्त इनको कुछ भी नहीं मिल पाया था। जिन्हें प्रेमचंद के बाद काफी पहचान मिली थी। वे एक राजनितिक वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता थे। जो खास तौर पर गरीबो और बेसहारा लोगो को

सहायता करते थे। अपने करियर में उन्होंने बहुत से निबंध, उपन्यास, लघु कथा, नाटक और दो यात्रा किताब और एक जीवनी की रचना की है।

शिक्षा (Yashpal Education) :

यशपाल हरिद्वार के आर्य समाज गुरुकुल में गये थे, क्योकि उनका परिवार उस समय बहुत गरीब था। ऐसे स्कूल को उस समय ब्रिटिश अधिकारी राजद्रोहपूर्ण स्कूल समझते थे, क्योकि ऐसी स्कूलो में ही, उस समय भारतीय संस्कृति और भारत की उपलब्धियों के बारे में बताया जाता और यही भारतीयों को अपने देश के प्रति लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

ब्रिटिश उस समय नही चाहते थे, की उनके खिलाफ कोई भी खड़ा हो सके और इसीलिए वे ऐसी स्कूलो का विरोध करते थे। यशपाल ने बाद में बताया की अपने स्कूल के दिनों में उन्होंने पहले से ही दिन में भारत की आज़ादी का सपना देख लिया था। बाद लाहौर में वे फिर अपनी माँ से मिले। Yashpal

लखनवी अंदाज़

लखनवी अंदाज़ summary - लखनवी अंदाज़ कहानी एक व्यंगात्मक कहानी है .यशपाल जी मध्यवर्गीय समाज की दोहरे मानसिकता पर व्यंग करने में सिद्धहस्त हैं .कहानी के प्रारंभ में लेखक एक पैसेंजर ट्रेन से पास के ही स्टेशन तक यात्रा करने के लिए सेकंड क्लास का टिकट खरीदता है .उसे ज्यदा दूर जाना नहीं था इसीलिए वह चाहता था कि एकांत में बैठकर नयी कहानी के सम्बन्ध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य भी देख सके.

लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ गया . एक बर्थ पर लखनऊ की नबाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बाद सुबदीहा से पालथी मारकर बैठे थे। उनके सामने ही दो ताज़े खीरे तौलिये पर रखे थे। सज्जन ने लकेहक के आने पर कोई उत्साह नहीं दिखाया। लेखक को लगा कि सज्जन उन्हें अपनी बराबरी का आदमी नहीं मानते।

काफी देर बाद नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित किया और खीरे खाने को कहा - *जनाब खीरे का शौक फरमाइए।* लेकिन लेखक ने सधन्यवाद सहित लौटा दिया। कुछ समय बाद नबाब साहब ने खीरे के नीचे रखा हुआ तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया। सीट के नीचे से लोटा उठाकर खीरे को खिड़की के बहार धोया और तौलिये

से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकाला। दोनों सिरों को काट पर गोदकर झाग निकाला। फिर जीरा मिला नमक और मिर्ची हुई लाल मिर्च लगाकर करीने से तौलिये पर सजाते गए.

यह सब करने के बाद नबाब साहब ने लेखक को खीरे के लिए पूछा और कहा कि - "*वल्लाह शौक कीजिये ,लखनऊ का बालम खीरा है। "*लेखक को खीरे को देखक मुँह में पानी आ रहा था लेकिन औपचारकिकतावश मेदा कमज़ोर होने की बात कहकर प्रस्ताव ठुकरा दिया।इसके बाद नबाब साहब ने खीरे की एक एक फाँक उठाकर होंठों तक लाकर ,फाकों को सूंघ कर ही आनंद से भरकर खिड़की से बाहर फेंखते गए। इस प्रकार रसास्वादन कर खीरे को फेंककर गर्व से पुलकित होकर कह रहे थे जैसे कि यह खानदानी रईस का तरीका हो। लेखक को नबाब साहब के पेट से डकार का शब्द भी सुनाई दिया।

यह सब देखकर लेखक सोचने लगा कि खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से आदमी का पेट भर सकता है तो बिना विचार ,घटना और पात्रों के नयी कहानी का लेखक मात्र अपनी इच्छा से कहानी क्यों नहीं लिख सकता है। लेखक ने नयी कहानी के लेखकों पर व्यंग किया है.

<u>दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें, लेखक का जीवन परिचय को कॉपी में लिखें तथा लखनवी अंदाज पाठ के सार को पढ़ कर समझें ।</u>